इकाई 8 जीन जॉक रूसो

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 जीवन और समय

8.3 तर्क के विरुद्ध विद्रोह

8.4 नागरिक समाज की समालोचना

8.5 सामाजिक अनुबंध

8.6 सामान्य इच्छा का सिद्धांत

8.7 प्रभुता-संपन्न के रूप में सामान्य इच्छा

8.8 आलोचनात्मक मूल्यांकन

8.9 सारांश

8.10 अभ्यास

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य जीन जैकस रूसो के राजनीतिक विचारों को समझना और उनका समीक्षात्मक मूल्यांकन करना और साथ ही यह देखना भी है कि पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन के इतिहास लेखन पर उसका क्या प्रभाव पड़ा। रूसो एक मेधावी दार्शनिक, प्रकोपी, उतना ही विवादास्पद और अपने समय का कटु आलोचक था। रूसो एक आधुनिक प्रोमिथियन (Promethean) था जिसने फ्रांसीसी क्रांति को प्रेरणा दी। वह तर्क और फ्रांसीसी प्रबोधन (enlightenment) के युग में रहा और जब उसने प्राचीन शासन की आलोचना की तब वह प्रबोधन का भी आलोचक बन गया। उसे सबसे अच्छे रूप में उसकी लोकप्रिय सर्वसत्तात्मकता की धारणा और सामान्य इच्छा (जिसने लोकतंत्रात्मक शासन का दार्शनिक औचित्य उपलब्ध कराया) के लिए याद किया जाता है।

रूसो एक ही समय में राजनीतिक सिद्धांतों की दो परंपराओं में एक साथ चलना चाहता है। जहाँ उसकी भाषा इच्छा और कार्य-दक्षता परंपरा के साथ है, उसकी पुस्तकों से प्राप्त अभिप्राय स्पष्ट रूप से राज्य के जैव (organic) सिद्धांत का पक्ष लेता है। परिणामस्वरूप उसका अर्थ विभिन्न रूपों में समझाया गया है और कई बार एक-दूसरे के विपरीत अर्थों में भी क्योंकि वह तत्काल ही व्यक्तिवादी और एक समूहवादी, एक अतुलनीय गणतंत्रवादी और एक आधुनिक निरंकुश-तंत्र से छुटकारा दिलाने वाला बन जाता है।

रूसो ने स्पष्टता से और बहुत अधिक लिखा है। उसकी पुस्तकों को दो चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहली अवधि की पुस्तकों में विज्ञान और कला पर और असमानता को उत्पत्ति पर भाषण हैं जिनमें रूसों ने नैतिक रूप में पतनोन्मुख प्राचीन शासन की कटु आलोचना की है किंतु आधुनिकता को भी केवल सशर्त सहमति दी। कला और विज्ञान की प्रगति के कारण आए तर्क की अप्राकृतिकता पर, मनोवेगों पर लगे ग्रहण (eclipse) और मानवता को भ्रष्ट करने पर अफसोस प्रकट करते हुए वह

एक स्वच्छंदतावादी विद्रोही के रूप में सामने आता है जो नागरिक समाज को उसके अन्यायों के लिए आड़े हाथों लेता है। दूसरे चरण में (जिसमें "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" सामने आया) रूसो अधिक गंभीर, तर्क के युग के साथ तारतम्य में और अब समाज को तार-तार करने की अपेक्षा से युक्तिपूर्ण तरीके से निर्मित करते हुए दिखाई देता है।

इस प्रकार दोनों चरणों के बीच एक तर्कसंगत विसंगति प्रतीत होती है। इस विसंगति को समझा जा सकता है क्योंकि मनःस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती है। किंतु रूसो के उद्देश्य में कोई विरोधाभास नहीं है, वह स्पष्ट है। और वह उद्देश्य है - एक लोकतांत्रिक शासन के लिए दार्शनिक औचित्य प्रदान करना। पहली अवस्था दूसरी की भूमिका है जिसमें सामान्य इच्छा का सिद्धांत दिया गया। उसका उद्देश्य और सिद्धांत समझने के लिए हमें सर्वप्रथम रूसो के व्यक्तित्व और उसके काल/समय से अध्ययन शुरू करना पड़ेगा।

8.2 जीवन और समय

रूसो का जन्म जिनेवा में एक निर्धन परिवार में हुआ था। रूसो को जन्म देने के कुछ दिन बाद ही उसकी माता की मृत्यु हो गई थी। रूसो के पिता उसे उपयुक्त वातावरण में ठीक प्रकार से पालने में असमर्थ थे। 12 वर्ष की अवस्था से ही रूसो विभिन्न व्यक्तियों की शार्गिदी में रहा। किंतु वह अपने आपको किसी भी क्षेत्र या कला में स्थापित नहीं कर पाया। जीवन के अधिकांश समय में उसने धनाभाव में ही जीवन व्यतीत किया। छोटे-छोटे काम करके और महिलाओं की उदारता से उसने अपना समय निकाला। अस्थाई भौतिक लाभों के लिए उसने अपना धर्म भी बदल लिया और उन लोगों से भी दान स्वीकार किया जिनसे वह घृणा करता था। 1744 में वह पेरिस गया। उसने रंगमंच, संगीत नाटिका (opera), संगीत, कविता आदि बहुत-सी योजनाओं को कार्य-रूप देने का प्रयत्न किया किंतु किसी में भी उसे अधिक सफलता नहीं मिली। फिर भी उसके व्यक्तित्व ने पेरिस के सर्वोत्तम अतिथि-कक्षों का दरवाज़ा उसके लिए खोल दिया। यहाँ पर उसकी भेंट विश्वकोश रचियताओं के साथ-साथ प्रभावशाली व्यक्तियों, आकर्षक महिलाओं से हुई जिनमें से बहुतों के साथ उसने निकट संबंध बनाए रखे। किंतु वह उच्च समाज से बचता रहा, उसने कभी भी अपनी निम्न-मध्यवर्गीय परिवार की निम्नवर्गीय शुद्धाचार वाली पृष्ठभूमि को नहीं छोड़ा।

रूसो ऐसे समय में रहा जब फ्रांस में निरंकुश सामंतवादी व्यवस्था का शासन था। इस शासन–व्यवस्था का प्रधान लुई XV था। राजनीतिक सत्ता, विशेषाधिकार तथा सामाजिक प्रतिष्ठा पर सम्राट, पादरी वर्ग तथा कुलीनवर्ग का एकाधिकार था, जो जन-सामान्य के खर्चे पर फिजूलखर्ची करते थे और असंयमित जीवन व्यतीत करते थे। जन-सामान्य को जीवित रहने के लिए हर समय कठोर परिश्रम करना पड़ता था। राजा की भ्रष्ट और अकुशल नौकरशाही सभ्य जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक न्यूनतम सुविधाएँ भी उनके लिए उपलब्ध नहीं होने देती थी। इस कारण चारों ओर असंतोष व्याप्त था और व्यवस्था में परिवर्तन लाने की इच्छा ने अवज्ञा का वातावरण उत्पन्न कर दिया था। असंतोष और परिवर्तन की इस इच्छा में साझीदार हो रहा था फ्रांस का नया सामने आ रहा बुर्जुग वर्ग, जिसे वर्तमान व्यवस्था उसके अपने विकास के लिए भी बहुत प्रतिबंध लगाने वाली लगती थी। इसलिए उन्होंने किसान वर्ग के साथ हाथ मिला लिया था।

प्राचीन शासन के विरुद्ध मत-निर्धारण और असंतोष की भावना को आकार देने में फ्रांस के "प्रबोधन" ने प्रमुख भूमिका अदा की। प्रबोधन ने हर चीज़ को केवल तर्क और अनुभव के आधार पर जाँचा। निश्चय ही इससे चर्च और फ्रांस की पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं सहित कई चीजों की आलोचना की गई, उनके विरुद्ध आवाज़ उठाई गई जो अब तक मानी हुई करके ले ली जाती थी। रूसो ने हालांकि प्रबोधन के कुछ विचारों को तो स्वीकार किया किंतु सभी नहीं माना। यहाँ तक कि फिलोसोफ़ (Philosophes) भी परिवर्तन चाहते थे। उन्होंने अपना विश्वास मनुष्य के स्वतंत्र व्यक्ति होने में रखा था। रूसो फ़िलोसोफ़ से सहमत था, किंतु उसने फ़िलोसोफ़ के प्रगति संबंधी उस विचार को नहीं माना जो उसकी आधुनिकता में निहित थी। रूसो भावनाओं को तर्कसंगतता से अधिक महत्व देता था। रूसो का मत था कि आधुनिक मनुष्य में जो गलत है वह है उसका भावना के साथ संपर्क समाप्त होना। फ़िलोसोफ़ की भावनाओं के प्रति असंवेदनशीलता और दासों की खरीदारी के कारण उसने तर्क के विरुद्ध विद्रोह का मार्ग अपनाया।

8.3 तर्क के विरुद्ध विद्रोह (Revolt Against Reason)

रूसों ने प्रबोधन की समालोचना 1749 में लिखे पुरस्कार प्राप्त करने वाले निबंध में की। रूसो ने यह निबंध" क्या विज्ञान और कला की प्रगति ने नैतिकता को भ्रष्ट या शुद्ध करने में योगदान दिया है?" (Has the progress of science and arts contributed to corrupt or purify morality?) विषय पर लिखा था। रूसो ने कहा कि विज्ञान हमें बचा नहीं रहा है बल्कि हमें नैतिक रूप में बर्बाद कर रहा है। जो उन्नति लग रही थी वह वास्तव में पीछे की ओर धकेला जाना था। सभ्य समाजों की कलाओं ने केवल मनुष्य की बेड़ियों के ऊपर मालाएँ पहनाने का काम किया। आधुनिक सभ्यता के विकास ने न तो मनुष्य को सुखी बनाया है और न ही सद्‌गुणी। सद्‌गुण सरल समाज में संभव था, जहाँ मनुष्य संयमी और मितव्ययिता का जीवन व्यतीत करता था। आज के आधुनिक दुनियादार समाज में मनुष्य भ्रष्ट हो गया है और जितनी अधिक दुनियादारी होगी उतना ही अधिक भ्रष्टता होगी।

जहाँ तक बेकन (Bacon) की पृथ्वी पर प्रचुरता निर्मित करने की महान आशा का संबंध है, रूसो को उसमें अच्छाई की अपेक्षा बुराई अधिक दिखाई दी। उसके विचार में प्रचुरता का अर्थ था - विलासिता; और विलासिता भ्रष्टाचार पैदा करने के लिए कुख्यात है। विलासिता देश को भी क्षति पहुँचा सकती है क्योंकि यह मनुष्य को दुर्बल बनाती है, नुकसान पहुँचाती है। एथेंस को, जो व्यसनों का केंद्र था तो उसकी अपना शोभा, वैभव, सम्पत्ति, कला और विज्ञान के कारण मिटना (बरबाद होना) ही था। उसे अपने मत के समर्थन में रोम के इतिहास से भी सहायता मिली। जब तक रोम निर्धन और सीधा-सादा था तब तक वह औरों से सम्मान पा रहा था, साम्राज्यों पर विजय प्राप्त कर रहा था। किंतु वैभव, विलासिता, दुनियादारी विकसित करने और विश्व का धन प्राप्त कर लेने पर रोम उन लोगों का शिकार हो गया जिन्हें यह भी पता नहीं था कि ऐश्वर्य क्या होता है।

रूसो ने कहा कि हमारे दिमाग उसी अनुपात में भ्रष्ट हुए हैं जिस अनुपात में कला और विज्ञान ने उन्नति की है। बहुत प्रशंसित शिष्टता, सभ्य शिष्टाचार की महिमा, रूसो के लिए केवल एक समान और धोखा देने वाला आवरण था जिसके अंदर उसे जलन, संदेह, डर, असभ्यता, खिलाफत, घृणा और धोखा नज़र आता था।

प्रबोधन के समर्थक बुद्धिमानी, ज्ञान का विकास और विज्ञान की प्रगति को सभ्यता की एकमात्र आशा मानते थे। किंतु इसके विरुद्ध रूसो ने सुशील और परोपकारी मनोभावों, सद्भाव और सम्मान को प्रस्तुत किया। उसने मनोभावों ओर विवेक को तर्क से अधिक महत्व दिया और कहा कि उसने मनोभावों के आधार पर ही सारे नैतिक मूल्यांकन किए हैं। बुद्धिमानी भयानक थी क्योंकि यह सम्मान को नष्ट करती थी, विज्ञान विनाशक है क्योंकि यह आस्था को समाप्त कर देता है, तर्क में बुराई है क्योंकि यह बुद्धि को नैतिक अंतःप्रेरणा के विरुद्ध रख देती है। बिना सम्मान, आस्था और नैतिक अंतःप्रेरणा के न चरित्र होगा और न ही समाज।

8.4 नागरिक समाज की समालोचना

उसके पुरस्कार प्राप्त निबंध में दी गई विषय-वस्तु को उसके 1754 में "मनुष्यों के बीच असमानता का उद्भव क्या है और क्या यह प्राकृतिक कानूनों द्वारा प्राधिकृत है?" (what is the origin of inequality among men, and is it authorised by natural law) विषय पर लिखे दूसरे निबंध में विकसित किया गया। दूसरा डिस्कोर्स (Discourse) के नाम से जाना जाने वाले इस निबंध में मनुष्य के पतन का वर्णन है। कैसे नागरिक समाजों के उदय से मनुष्य की प्रकृति में बदलाव आया, वह पथभ्रष्ट और दुराचारी हुई - जिसके कारण निजी संपत्ति की संस्था का उदय हुआ और उसकी रक्षा के लिए "कानून द्वारा सामाजिक असमानताओं को उचित ठहराया जाना आवश्यक हो गया।" यहाँ पर रूसो ने "प्राकृतिक मनुष्य" की प्रशंसा के पुल बाँध दिए और तथाकथित "सभ्य मनुष्य" को अवहेलना की दृष्टि से देखा। प्रकट रूप में यह समस्या मनुष्य के साथ नहीं थी बल्कि उस समाज की प्रकृति में थी जिसमें वह रह रहा था।

पतन की शुरुआत का पता लगाने का प्रयत्न करते हुए रूसो कहता है कि प्राकृतिक रूप में रहने की स्थिति में, जो समाज के उदय से पहले की स्थिति थी, मनुष्य एक भद्र वन्य प्राणी था, अकेले रहता था और उसकी कुछ मूलभूत तथा आसानी से पूरी की जा सकने वाली आवश्यकताएँ थी। यह न प्रचुरता की स्थिति थी और न अभाव की। न वहाँ झगड़े थे और न ही सामूहिक जीवन। वहाँ कोई भाषा, विज्ञान या कला भी नहीं थी। ऐसी स्थिति में मनुष्य न खुश था न दुखी, उसकी कोई ठीक या गलत, सद्गुण या दुर्गण की धारणा नहीं थी। भद्र जंगली तर्क से दिशा-निर्देशित न होकर केवल दो मूल प्रवृत्तियों - आत्मप्रेम या आत्मसंरक्षण की मूल प्रवृत्ति और सहानुभूति या एक-दूसरे के प्रति उदारता की मूल प्रवृत्ति - से निर्देशित था।

प्रकृति की स्थिति, निर्दोषिता की स्थिति थी और यह बहुत समय तक नहीं चली। जैसे-जैसे समय बीता उस सभ्य वन्य प्राणी ने (जो अकेला रहता था) श्रम की उपयोगिता और लाभ का पता लगा लिया। अपना वन्य (आदिकालीन) स्वरूप छोड़े बिना ही वह कभी-कभी एक-दूसरे के साथ मिलने लगा और उसने एक अस्थाई व्यवस्था बनाई। उसके बाद मनुष्य ने अपने लिए शरण-स्थल बनाने शुरू कर दिए जिसमें परिवार साथ-साथ रहने लगे। इस स्थिति को रूसो ने "पितृसत्तात्मक चरण" कहा। किंतु जैसे-जैसे मनुष्य ने अपने सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाना शुरू किया, वैसे-वैसे उसने परिश्रम और विचारों को पहचानना शुरू कर दिया अर्थात् तर्क और भाषा का प्रयोग प्रारंभ हुआ। इससे मनुष्य का पहला पतन हुआ। हालाँकि श्रम विभाजन की खोज ने मनुष्य को निर्वाह प्रधान अर्थव्यवस्था से उत्पादन विकास की अर्थव्यवस्था में पहुँच दिया किंतु इसने मानव पितृसत्तात्मक चरण में उपलब्ध सारी खुशी को छीन लिया। धातु कर्मविज्ञान और कृषि का प्रादुर्भाव निश्चय ही एक क्रांतिकारी विकास था। किंतु लोहे और अन्न (जिसने मनुष्य को सभ्य बनाया) ने मानवता का सर्वनाश कर दिया।

धरती के कृषि के लिए प्रयोग ने उसे हिस्सों में बाँट दिया और इसने निश्चित रूप से निजी संपत्ति की धारणा को जन्म दिया। जैसा कि रूसो का प्रसिद्ध कथन बताता है "प्रथम मनुष्य जिसने अपनी धरती के भाग के चारों तरफ बाड़ लगाई और घोषणा की कि "यह मेरी है" और उसे साधारण विश्वास वाले मनुष्य मिल गए जिन्होंने उसके कथन को मान लिया, वही वास्तव में नागरिक समाज का संस्थापक था।"

एक बार मनुष्य ने अपनी संपत्ति का दावा करना प्रारंभ कर दिया तो मनुष्य की प्रतिभाओं और कौशलों की असमानता के कारण उनकी समृद्धि में भी अंतर आ गया। संपत्ति से मनुष्य ने कुछ अन्य लोगों को अपना दास बना लिया। संपत्ति का स्वामी होने ने ही उसके तीव्र उत्साह को जाग्रत कर दिया तथा प्रतिस्पर्द्धा और संघर्ष को भड़का दिया।

संघर्ष के परिणामस्वरूप शांति स्थापित करने के लिए कानूनी व्यवस्था की आवश्यकता पड़ी। समृद्ध लोगों ने इस माँग को विशेष रूप से मुखर किया क्योंकि जहाँ विद्रोह, अराजकता की स्थिति से सभी के जीवन को खतरा हुआ धनी व्यक्तियों के लिए यह और अधिक बुरा था क्योंकि इससे उनकी संपत्ति को भी खतरा था। अतः एक समृद्ध व्यक्ति द्वारा निर्धन के अहित के लिए सामाजिक अनुबंध का उपाय सोचा गया।

रूसो कहता है कि इसका परिणाम था - नागरिक समाज और कानून व्यवस्था का उदय, जिसने निर्धनों पर और बंधन लगाए एवं समृद्धों को और शक्तियाँ दीं। इसने प्राकृतिक स्वतंत्रता हमेशा के लिए समाप्त कर दी, सबके लिए संपत्ति और असमानता के नियम निर्धारित कर दिए, औरों के अधिकारों को चतुराई से हड़पने को निर्धारित अधिकार में परिवर्तित कर दिया तथा कुछ महत्वाकांक्षी लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए पूरी मानव जाति को उस समय से श्रमिक, दासता और दुर्भाग्य के हवाले कर दिया।

रूसो का मत था कि फिर भी स्थिति इतनी खराब नहीं होनी चाहिए थी जितनी कि वह हो गई। यदि सरकार की स्थापना के साथ मनुष्य सीधा कड़ियों के बंधन में चला गया तो वह इसलिए था क्योंकि मनुष्य को राजनीतिक संस्थाओं के लाभ की तो समझ थी किंतु उसके खतरों की पूर्वानुमान लगाने का अनुभव नहीं था। इस विषय-वस्तु के लिए रूसो को कुछ वर्षों के उपरांत पुनः सामाजिक अनुबंध (social contract) सिद्धांत पर वापस आना पड़ा।

फिर भी यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि रूसो प्राकृतिक स्थिति से नागरिक समाज तक पहुँचने की प्रक्रिया को ऐतिहासिक वास्तविकता के रूप में नहीं बता रहा था बल्कि उपर्युक्त वर्णन को एक अनुमानिक तर्क के रूप में लिया जाना चाहिए जिसका अनुमान वस्तुओं/तथ्यों की प्रकृति को समझाने के लिए लगाया गया था न कि वास्तविक शुरुआत निर्धारित करने के लिए।

8.5 सामाजिक अनुबंध (Social Contracts)

यद्यपि रूसो ने नागरिक समाज के गुण-अवगुण की जाँच की किंतु उसने मनुष्य को आदिकालीन जीवन का चयन करने का सुझाव कभी नहीं दिया। जबकि उसके कुछ आलोचकों ने इसी रूप में गलती से उसे प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। वास्तव में वाल्टेयर ने रूसो का यह कहकर मज़ाक भी उड़ाया कि वह हमें चारों पैरों (दो हाथ, दो पैर) पर चलवाना चाहता था। अपने डिस्कोर्स ((discourse)

में ही रूसो स्वयं प्रश्न करता है कि फिर क्या किया जाना चाहिए? क्या meum और tuum को मिटा दिया जाना चाहिए और क्या हमें फिर से जंगलों में, भालुओं के बीच में रहने के लिए लौट जाना चाहिए। यही मेरे आलोचकों द्वारा निकाला गया निष्कर्ष है जिसका मैं तत्काल अनुमान लगाकर उन्हें ऐसा निष्कर्ष निकालने के लिए शर्मिंदा होने के लिए छोड़ दूँगा।

इस प्रकार प्राकृतिक आदिकालीन जीवन की स्थिति पर वापस जाने का प्रश्न ही नहीं था। रूसो मानता था कि समाज अनिवार्य है, इसके बिना मनुष्य अपनी पूर्णता या अपनी संभावनाओं को प्राप्त नहीं कर सकता। यदि वह नागरिक समाज के अवगुण दिखा रहा था तो वह इसलिए था क्योंकि वह समाज न्यायोचित सिद्धांतों पर निर्भर नहीं था और वह लोगों को भ्रष्ट कर रहा था। अतः काम एक नई सामाजिक व्यवस्था विकसित करने का था जो मनुष्य की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति समझने में सहायता करे।

अपने सामाजिक अनुबंध में रूसो ने यही करने का प्रयत्न किया। आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण का मूल उपाय था - राजनैतिक बंधनों की (जैसे व्यक्ति राज्य की आज्ञा का स्वतंत्रता के साथ सत्ता के उपयुक्त समन्वय के माध्यम से किस प्रकार पालन करे), समस्या को इस प्रकार देखना जैसे कि यह होना चाहिए। रूसो के मतानुसार यह काम उसके पहले के दार्शनिकों द्वारा असंतोषजनक और अपर्याप्त रूप में किया जा रहा था।

''सामाजिक अनुबंध'' नाटकीय रूप में खुलता है। ''मनुष्य जन्म से तो स्वतंत्र है, लेकिन हर जगह कड़ियों से जकड़ा हुआ है।'' उसका उद्देश्य यह है कि किस प्रकार समकालीन समाज की अवैध कड़ियों को विधि-सम्मत बनाए। इस प्रकार के उद्देश्य के साथ रूसो की सैद्धांतिक समस्या है ''संबंधों की इस प्रकार की व्यवस्था ढूँढना जो पूरी सामान्य शक्ति के साथ इसमें सम्मिलित होने वाले सभी व्यक्तियों और उनकी सम्पत्ति की रक्षा करने तथा सुरक्षित रखने योग्य हो, और जिसमें व्यक्ति अपने आपको सबके साथ मिलाते समय भी केवल अपनी आज्ञा का पालन करे एवं स्वतंत्र रहे'' एक सामाजिक अनुबंध के माध्यम से।

सामाजिक अनुबंध "सभी अनुबंधकर्ताओं के लिए, अपने सभी अधिकारों के साथ, पूरे समुदाय को संपूर्ण स्वामित्व का अंतरण करना" आवश्यक बनाता है। प्रत्येक मनुष्य अपने आपको सबको देता है, लेकिन अपने आपको किसी विशेष व्यक्ति को नहीं देता क्योंकि वहाँ पर उसके साथ सम्मिलित होने वाले ऐसे कोई मनुष्य नहीं हैं जिनके ऊपर उसे वह सब अधिकार नहीं मिलते जो वह उन्हें अपने ऊपर देता है, उसे उस सबका समतुल्य प्राप्त हो जाता है जो वह खोता है और उसके पास जो है उसे उसकी रक्षा करने के लिए और शक्ति प्राप्त हो जाती है। सार रूप में सामाजिक अनुबंध में भाग लेने वाले आपस में "इस बात से सहमत होते हैं कि हम सब आपस में मिलकर अपने आपको और अपनी सारी शक्ति को सामान्य इच्छा द्वारा निर्देशित सबके उपयोग के लिए प्रयोग में लाएँगे और एक संस्था के रूप में हम प्रत्येक सदस्य को संपूर्ण के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करते हैं।"

अनुबंध के परिणामस्वरूप, निजी व्यक्ति समाप्त हो गए क्योंकि अनुबंध से सबका एक नैतिक और सामूहिक स्वरूप बन गया। इसी के परिणामस्वरूप एकता, एक साझी पहचान, उसका जीवन और उसकी इच्छा मिल गई। सभी व्यक्तियों के मिलने से बना यह सार्वजनिक व्यक्ति जब अकर्मक होता है तो राज्य है। जब वह क्रियाशील होता है तो संप्रभु/राजा है, जब उसकी तुलना इसी प्रकार की संस्थाओं से की जाती है तो वह एक शक्ति होती है।

राज्य की संस्था के बाद, रूसो ने मनुष्यों में एक बहुत बड़े अंतर की कल्पना की। वह उसके आचरण में मनोभावना के स्थान पर न्याय व्यवस्था को रखता है और उसके कार्यों को एक नैतिक स्वरूप देता है जो अब तक उसमें नहीं था। रूसो तो यहाँ तक कहना है कि इससे वह एक मूर्ख और सीमित पशु के स्थान पर एक बुद्धिमान प्राणी और मनुष्य में परिवर्तित हो जाता है।

किंतु यदि अनुबंध की कल्पना एक अकेली और विशिष्ट घटना के रूप में की जाए तो इस प्रकार का परिवर्तन काल्पनिक, असंभव होगा। किंतु रूसो के लिए अनुबंध एक अकेली घटना नहीं है बल्कि सोचने का एक तरीका है। यह रूप प्राप्त अनुबंध एक प्रक्रिया बन जाता है और हम मानव प्रकृति में अंतर आने की कल्पना कर सकते हैं जो क्रमिक रूप में आएगा एकदम से नहीं। यहाँ हमारे पास एक धारणा है जिसकी नैतिक संवेदनशीलता और बौद्धिक तेज धीरे-धीरे सामान्य इच्छा में निरंतर भागीदार बनने के कारण आए मनुष्य के सामाजिक संबंधों के व्यापक और गहरे होने के साथ-साथ निरूपित और विकसित होता चलता है।

8.6 सामान्य इच्छा का सिद्धांत (Theory of General Will)

सामान्य इच्छा को सर्वप्रभुत्व संपन्न बनाकर और व्यक्ति को सामाजिक इच्छा में भागीदार बनाकर रूसो ने सत्ता के साथ स्वतंत्रता में समन्वय करने का प्रयास किया। ऐसा उनके पूर्व किसी ने नहीं किया था। यह समझने के लिए कि रूसो ने यह उद्देश्य कैसे प्राप्त किया हमें सामान्य इच्छा की प्रकृति को समझना होगा।

''डिस्कोर्स ऑन पॉलिटिकल इकोनॉमी'' (Discourse on the Political Economy) में, जहाँ उसने सबसे पहले सामान्य इच्छा की संकल्पना प्रस्तुत की है, रूसो कहता है कि"सामान्य इच्छा सदैव संपूर्ण और उसके प्रत्येक भाग का कल्याण और संरक्षण करती है। यह कानून का स्रोत है। राज्य के सभी सदस्यों के लिए, आपस में एक-दूसरे के साथ संबंध और राज्य के साथ संबंध के लिए यह नियम निर्धारित करती है कि क्या ठीक है और क्या गलत है।" इसका लक्ष्य सदैव लोगों की भलाई करना होता है और यह सबकी इच्छा से भिन्न है क्योंकि जहाँ पहला सामान्य हित के लिए प्रयास करता है वहीं दूसरा केवल निजी हित के लिए काम करता है जो सदैव विशेष इच्छाओं का योग होता है।

इच्छा की सामान्यता में संख्या उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि उसकी अंतर्निहित विशेषता और अच्छाई। यह उतना एक ऐतिहासिक तथ्य नहीं है जितना कि नैतिक तथ्य। यह नागरिकों के हृदय से निकली नैतिक अभिवृत्ति का परिणाम है जो न्यायोचित रूप से काम करने के लिए कहती है। जब भी समूह के सभी लोग मिलकर, अपने निजी स्वार्थों को छोड़कर, पूरे समाज के लिए अच्छे समझे जाने वाले लक्ष्य के लिए एक होकर काम करते हैं तो यह उत्पन्न हो जाती है। सामान्य इच्छा सभी से प्राप्त होती है और सभी पर लागू होती है और इसमें सभी की न्यायसंगत इच्छा सम्मिलित होती है।

यद्यपि रूसो यह मानता है कि कभी-कभी सामान्य इच्छा पर सदस्य एकमत नहीं हो पाते क्योंकि भले ही व्यक्ति अच्छा करना चाह रहे हों किंतु हो सकता है कि वह अच्छे को हमेशा ठीक से समझ या जान न पाएँ। ऐसा विशेष रूप से तब होता है जब समाज के कुछ भाग स्वतंत्र नागरिकों के लिए साझी अच्छाई को प्राप्त करना कठिन बना दें। रूसो सुझाव देता है कि इस प्रकार की स्थिति में ''.... यदि हम इच्छाओं में से आपस में टकराव वाले विभिन्न विशेष हित बाहर निकाल लें तो सब इच्छाओं को मिलाकर जो शेष रह जाता है वह सामान्य इच्छा है।" किंतु यहाँ पर एक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि

परिणाम सामान्य इच्छा होगा, यदि केवल और जहाँ तक हो सके, समूह के सभी लोग अपने समूह के सदस्य होने के विचार से (चाहे अपने निजी हित को साधने में) ही कार्य करें और समूह के सभी सदस्यों के हित सम्मान योग्य और ध्यान दिए जाने योग्य हों।

सामान्य इच्छा की प्रकृति यदि इस प्रकार की हो तो उसका पालन करने में कोई समस्या नहीं है। किंतु यदि कोई उसका पालन करने से मना करे तो रूसो कहता है कि, "उसे उसका पालन करने के लिए बाध्य किया जाएगा" अन्यथा सामाजिक अनुबंध एक खोखला फार्मूला बनकर रह जाएगा। इसके अतिरिक्त इस प्रकार की बाध्यता को इसलिए उचित ठहराया गया क्योंकि व्यक्ति ने पहले से इसके लिए अपनी सहमति दी हुई है कि वह राज्य द्वारा नियंत्रित किया जाएगा। उसने यह सहमति इस तथ्य को भली प्रकार से समझते हुए कि सामाजिक रूप से संबद्ध आचरण दीर्घकाल में उसके अपने हित में होगा और साथ ही यह भी समझते हुए कि कभी-कभी जब उसे लगेगा कि उसके निजी हित बहुत शक्तिशाली और आकर्षक हो गए हैं। इसलिए जब भी कभी वह उनके प्रलोभन में पड़े तो उसे नियंत्रित किया जाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, जब किसी व्यक्ति को नागरिकों के पूरे निकाय द्वारा सामान्य इच्छा का पालन करने के लिए बाध्य किया जा रहा है तो इसका अर्थ यही हुआ कि उससे उसका अपना ही सर्वोत्तम हित पालन करने के लिए कहा जा रहा है और किसी विशेष परिस्थितिवश उसे यह बात समझ नहीं पा रही है। इस प्रकार सामान्य इच्छा का पालन करना एक प्रकार से व्यक्तियों की नैतिक स्वतंत्रता का अभिव्यक्ति है। इस तरह जब सामान्य इच्छा व्यक्तियों के ऊपर शासन करती है तब उन्हें अपनी स्वतंत्रता के कम होने से असंतुष्ट नहीं होना चाहिए। चूँकि राजा के प्रति आज्ञाकारिता, किसी बाह्य सत्ता की आज्ञा का पालन या किसी एक या कुछ व्यक्तियों के स्वेच्छाचारी शासन की आज्ञा का पालन न होकर, वास्तव में उनके न्यायसंगत भाग के शासन के प्रति या स्वशासन (अर्थात् एक ऐसा शासन जो वही करेगा जो मनुष्य का न्यायोचित स्वयं वास्तव में चाहेगा) के प्रति आज्ञाकारिता होगी।

8.7 प्रभुता-संपन्न के रूप में सामान्य इच्छा

उपर्युक्त से यह भी स्पष्ट है कि रूसो की सप्रभुता (sovereignty) की संकल्पना हॉब्स और लॉक, दोनों की संकल्पना से भिन्न है। हॉब्स में व्यक्ति संप्रभुता बनाते हैं और फिर सारी शक्ति उसे दे देते हैं। लॉक के सामाजिक अनुबंध में व्यक्ति सीमित उद्देश्यों के लिए एक सीमित सरकार स्थापित करते हैं। लेकिन लॉक राजनीतिक निरंकुशतावाद के प्रतीक के रूप में संप्रभुता - चाहे वह लोकप्रिय संप्रभुता हो या एकराजीय संप्रभुता हो - से बचता है दूसरी ओर रूसो की संप्रभुता सामाजिक अनुबंध से राजनीतिक समुदाय से बनी है।

लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक विचारकों से भिन्न रूसो व्यक्तियों की संप्रभुता को अहस्तांतरणीय और अविभाज्य मानता है। व्यक्ति अपना स्वशासन का चरम अधिकार किसी अन्य व्यक्ति या संस्था को अपना भाग्य निश्चित करने को लिए दे या हस्तांतरित नहीं कर सकता है। जहाँ एक ओर हॉब्स एक शासक को संप्रभु के रूप में स्थापित करता है, वहीं रूसो संप्रभुता जोकि सदैव और पूर्ण-रूप में व्यक्तियों और सरकार में निहित है और जैसे कि लॉक की धारणा में संप्रभुता-संपन्न व्यक्तियों की मात्र एक अस्थाई संस्था है) में काफी अंतर बताते हैं। जहाँ लॉक के मत में, व्यक्ति अपनी विधायी, कार्यकारी, न्यायपालिका और संप्रभुता के उपयोग का अधिकार सरकार के विभिन्न अंगों को

हस्तांतरित कर देते हैं, रूसो की अहस्तांतरणीय और अविभाज्य की धारणा प्रभुता-संपन्न व्यक्तियों को अपने विधायी कार्यों को राज्य में सर्वोच्च सत्ता को हस्तांतरित करने की अनुमति नहीं देती है। जहाँ तक कार्यकारी और न्यायिक कार्यों का संबंध है, रूसो यह महसूस करता है कि इनका उपयोग सरकार के विशिष्ट अंगों द्वारा ही किया जाना चाहिए किंतु वे पूरी तरह से प्रभुता-संपन्न व्यक्तियों के अधीन हों और इसमें शक्तियों के विभाजन या संतुलन के लिए कोई संकेत या सुझाव नहीं है।

चूँकि सामान्य इच्छा अहस्तांतरणीय और अविभाज्य है, इसलिए इसका प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता है। दूसरे, प्रतिनिधि सभाओं में समुदाय के हित को भुलाकर अपना विशेष हित विकसित करने की प्रवृत्ति होती है। कोई आश्चर्य नहीं कि रूसो ने सदैव स्विस नगरों के गणतंत्र की भाँति सीधे प्रजातंत्रों को वरीयता दी, हालांकि जब आधुनिक राष्ट्र उभर रहे थे तो इस प्रकार की वरीयता देशकाल-दोष संबंधी थी। सामान्य इच्छा किसी भी रूप में किसी और को सौंपी नहीं जा सकती है। इसे किसी और को अधिकृत करने (सौंपना) के प्रयास का अर्थ इसकी समाप्ति होगा। जैसा कि उसने कहा "जिस क्षण वहाँ कोई स्वामी होगा, वहाँ कोई संप्रभुता नहीं रह जाएगी।" यह केवल "व्यक्तियों की आवाज है", वह "ईश्वर की आवाज़ है"।

8.8 आलोचनात्मक मूल्यांकन

रूसो की पहले की पुस्तक ''डिस्कोर्स ऑन इनइक्वेलिटी'' (Discourse on Inequality) और बाद की ''सोशल कॉन्ट्रेक्ट'' (social contract) के बीच स्पष्ट अंतर और बुनियादी तार्किक विसंगतियाँ हैं। जैसा कि वॉन (Voughan) कहता है उसके कार्य के पहले चरण में विद्रोही व्यक्तिवाद दिखाई देता है तो बाद के चरण में विद्रोही समष्टिवाद अथवा समूहवाद।

यद्यपि रूसो को स्वयं कभी इतना विरोध महसूस नहीं हुआ। "कन्फेशंस" में वह कहता है कि सामाजिक अनुबंध का प्रत्येक प्रबल विचार पहले "डिस्कोर्स ऑन इनइक्वेलिटी" में प्रकाशित हो चुका है। सैबाइन का मत है कि हालांकि यह भी सत्य है कि रूसो के लेखों में आपस में मेल न खाने वाले विचार भरे हुए हैं फिर भी वह अपने विचार में ठीक है। बहुत कुछ जो विद्रोही व्यक्तिवाद के रूप में दिखाई देता है, वह "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" में भी विद्यमान है। उदाहरण के लिए, सामान्य इच्छा के सृजन के लिए सामाजिक अनुबंध की धारणा का प्रयोग।

उसकी पहले की पुस्तकों और ''सोशल कॉन्ट्रेक्ट'' में अंतर केवल इतना है कि पहली पुस्तकों में उसने अनुपयुक्त सामाजिक दर्शन से दूर रहकर स्वतंत्र रूप में अपने आप लिखा है जबकि बाद में वह अपना एक निर्धारित किया गया प्रति-दर्शन प्रस्तुत कर रहा था। उसने अपने आपको सामाजिक दर्शन से अलग कर लिया था। सामाजिक दर्शन वह व्यवस्थित व्यक्तिवाद का था, जिसके अनुसार मनुष्य नैतिक और तर्कसंगत व्यक्ति है; उसे स्वामित्व और अंतर्निहित अधिकारों का ज्ञान है; वह निजी हित के लिए एक-दूसरे से सहयोग करता है; समुदाय और नागरिक समूह सर्वव्यापी स्वार्थवाद से सृजित हुआ था और आनन्द या आत्म-संतोष के संवर्धन और अधिकारों की रक्षा के लिए उसका स्वरूप उपयोगितावादी था। यद्यपि यह मूल्यों की रक्षा करता था, किंतु फिर भी इसका अपना अकेले का कोई महत्व नहीं था।

रूसो लॉक के इस व्यवस्थित व्यक्तिवाद का आलोचक था क्योंकि यह मानव प्रकृति के अनुरूप नहीं था जिस रूप में रूसो ने उसे समझा था। रूसो के लिए न्यायसंगत होने का गुण, अनुमान लगा पाने की शक्ति, आनन्द की इच्छा, स्वामित्व का विचार, एक-दूसरे के साथ संप्रेषण करने की शक्ति और

सरकार बनाने को लिए समझौता करना आदि सभी ऐसे गुण हैं जो समाज में रहने पर ही व्यक्ति में विकसित होते हैं न कि ये मानव के सहजात गुण हैं। इसके अतिरिक्त रूसो ने सोचा कि यह सोचना बिल्कुल गलत है कि यदि व्यक्ति केवल अपनी व्यक्तिगत प्रसन्नता से सरोकार रखते हैं तो केवल तर्क ही व्यक्तियों को कभी एक साथ ला सकेगा, क्योंकि निजी हित का विचार भी उसी समुदाय में जन्म लेता है जिसमें वह रहता है। दूसरे, सामाजिक जरूरतों की तुलना में, आत्महित अधिक स्वाभाविक या जन्मजात नहीं है, जो मनुष्य को समुदाय में एक-दूसरे के साथ रहने के लिए आकर्षित करता है। रूसो का मानना था कि कुल मिलाकर आत्महित में दूसरों के दुख के प्रति एक जन्मजात घृणा होती है। सामाजिकता का समान आधार तर्क न होकर भावना है। सिद्धांत रूप में कल्पित स्वार्थी व्यक्ति प्रकृति में न रहकर केवल पथभ्रष्ट समाज में रहते हैं। परिणामस्वरूप उनके सिद्धांत भी गलत थे और ''डिस्कोर्सिस ऑन इनइक्वेलिटी'' में "अहितकारी अनुबंध" (evil contract) की छाया थी। मानव स्वभाव को समाजीकरण की स्थिति के आगे जाकर ही समझा जा सकता है। ऐसा न हॉब्स ने किया और न ही लॉक ने। उन दोनों के लिए तो प्राकृतिक अवस्था सामाजिकता से पूर्व की अवस्था (state of nature) है। यद्यपि हॉब्स का मानना था कि प्राकृतिक अवस्था, समाज-पूर्व की अवस्था है किंतु वास्तव में यह इसलिए नहीं है क्योंकि हॉब्स द्वारा चित्रित मनुष्य के गुण सार्वजनिक मनुष्य के गुण हैं। रूसो के लिए प्राकृतिक स्वार्थी मनुष्य कल्पित वस्तु है।

अपना प्रति-दर्शन विकसित करने में रूसो को प्रतिष्ठित (उच्च) यूनानी विचारधारा से बहुत सहायता मिली : (1) यह मनुष्य की प्रकृति है कि वह जैविक तरीकों में एक-दूसरे से जुड़ता है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक का विकास सबके विकास पर निर्भर है। इस प्रकार के जैविक संबंधों के बिना मनुष्य अपनी वास्तविक प्रकृति को प्राप्त नहीं कर सकता या अपना पूर्ण मानव का स्वरूप नहीं प्राप्त कर सकता। एकाकीपन और पृथक्करण उसकी प्रकृति के विपरीत है - इस प्रकार रॉबिन्सन क्रूसो एक मिथ्या उदाहरण है। (2) मनुष्य केवल समाज में ही अधिकार, स्वतंत्रता और नैतिकता प्राप्त करता है - समाज के बाहर स्वतंत्रता हो सकती और अधिकार भी मात्र एक शक्ति के रूप में मिल सकते हैं किंतु कोई नैतिकता नहीं हो सकती। (3) मनुष्य वही बनता है जो समाज उसे बनाता है। यदि समाजीकरण बुरा है तो उसकी प्रकृति विकृत और भ्रष्ट होगी। (4) समाज ही नैतिक शिक्षा का प्रमुख स्रोत है और इसलिए उच्चतम नैतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है; तथा (5) राजनीतिक अधीनता मूलतः नैतिक है तथा केवल गौण रूप में न्याय और शक्ति का विषय है।

प्रतिष्ठित यूनानी दर्शन से प्राप्त अंतर्दृष्टि के साथ रूसो ने अपना राजनीतिक सिद्धांत बनाया। उसने व्यवस्थित व्यक्तिवाद को अस्वीकृत करके व्यक्ति को यह सोचने पर मजबूर किया कि समाज केवल व्यक्तियों को एकत्रित करके बने एक समूह से अधिक महत्वपूर्ण है; सबका भला - सार्वजनिक भला - प्रत्येक व्यक्ति के अपने निजी हितों या सार्वजनिक स्वार्थों को साधने से नहीं हो सकता। जब तक मनुष्य अपने निजी हितों के आगे सार्वजनिक हित के संबंध में या संपूर्ण, जिसके वह भाग हैं, की भलाई के संबंध में नहीं सोचेगा वह अपना भला भी नहीं कर पाएगा।

इसके अतिरिक्त, जब व्यक्ति सार्वजनिक भलाई के संबंध में सोचने लगेंगे तो शासन (जो व्यवस्था के लिए आवश्यक है) और स्वतंत्रता (जो खुशहाली और आत्मविश्वास के लिए आवश्यक है) में सामंजस्य हो सकेगा। लॉक और हॉब्स, दोनों ही इस समन्वयन के संबंध में असफल रहे क्योंकि उनका व्यक्ति संबंधी सिद्धांत ही गलत था। लॉक स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है किंतु शासन/सत्ता से डरता है जबकि हॉब्स व्यवस्था और शांति के लिए व्यक्ति का शासक के पक्ष में बलिदान देने को तैयार है।

सामान्य इच्छा के सिद्धांत की दार्शनिक अंतर्दृष्टि का ज्यादा महत्व है और इसने राज्य की एक मशीन नहीं बल्कि एक संस्थान के रूप में एक अलग स्वरूप की संकल्पना प्रस्तुत की। किंतु रूसो ने अपने सिद्धांत के व्यावहारिक निहितार्थों पर विचार करने का प्रयत्न नहीं किया। इसका एक परिणाम यह निकला कि रूसो लोकतांत्रिक शासन के दार्शनिक औचित्य को स्थापित करने और सत्ता एवं स्वतंत्रता के बीच राज्य के यांत्रिक सिद्धांत में विद्यमान तनाव को दूर करने के प्रयास में, अपनी मंशा के विपरीत वह बहुतों के मत में आधुनिक सर्वसत्तात्मक राज्य का अधिष्ठाता बन गया।

दुर्भाग्य से, उसके सामान्य इच्छा के सिद्धांत ने एक निरंकुश शासक को अनुशासनहीन प्रजा पर यह कहते हुए ज़बरदस्ती करने का बहाना उपलब्ध करा दिया कि उसे यह पता ही नहीं है कि सामान्य इच्छा क्या है, क्योंकि वह अपनी इच्छा के ज्ञास हैं। इस संदर्भ में रूसो की "स्वतंत्रता के विरोधाभास" (paradox of freedom) ने गंभीर रूप अपना लिया। स्वतंत्रता एक डरावना शब्द बन गया, यह उस मनोभाव का नाम बन गया जिसकी सहायता से स्वतंत्रता पर आक्रमण को भी ठीक माना जा सकता था।

किंतु इसके द्वारा इससे भी अधिक भयंकर ध्वनित अर्थ यह था कि वह व्यक्ति जिसके नैतिक विश्वास उसके समाज में सामान्य रूप से धारित/प्रचलित विश्वासों के विरुद्ध हैं वह अस्थिर मन का है। अतः उसका दमन कर दिया जाना चाहिए। जैसा कि सैबाइन ने कहा है, यह संभवतः सामान्य इच्छा के अमूर्त सिद्धांत का न्यायसंगत निष्कर्ष नहीं है। अंतरात्मा की स्वतंत्रता वास्तव में एक सामाजिक अच्छाई है न कि एक व्यक्तिगत अच्छाई मात्र। किंतु प्रत्येक मूर्त स्थिति में सामान्य इच्छा को किसी वास्तविक मत वाले व्यक्ति के साथ तादात्म्य स्थापित करना होगा और नैतिक अंतर्ज्ञानवाद का सामान्यतः अर्थ यह होता है कि नैतिकता उन मानदंडों के साथ पहचानी जाती है या तादात्म्य स्थापित करती है जो सामान्य रूप से स्वीकृत होते हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति को स्वतंत्र होने के लिए बाध्य करना, उससे सबसे अधिक शक्तिशाली पार्टी या जनसामान्य की इच्छा या अंधानुपालन करवाने को उचित ठहराना है।

इस प्रकार ऐसा दुरुपयोग इसलिए संभव हुआ क्योंकि सामान्य इच्छा का सिद्धांत बहुत ही अमूर्त था और उसकी स्थिति एवं पहचान का पता लगाने में कठिनाई थी। सामान्य इच्छा सदैव ठीक होती है, यह मात्र सामान्योजित है क्योंकि यह सामाजिक अच्छाई का पक्ष लेती है जो स्वयं ठीक है या नहीं का मापदंड है। किंतु इस संबंध में दिए गए विरोधी निर्णयों में यह अंतिम रूप से ठीक होना किस प्रकार निर्धारित होगा? किसे यह निर्णय लेने का अधिकार होगा कि क्या ठीक है? सैबाइन लिखता है कि रूसो के इन प्रश्नों के उत्तर देने के प्रयास ने ही विभिन्न प्रकार के विरोधाभासों और उत्तरों से बचने की शुरूआत की। इसी प्रकार वेपर (Wayper) ने टिप्पणी की कि दुर्भाग्य से रूसो इसमें हमारी सहायता नहीं कर सकता। "वह कभी यह नहीं बता सकता कि निश्चित रूप से हमें कैसे पता लगेगा कि सामान्य इच्छा क्या है .... सामान्य इच्छा जैसी महत्वपूर्ण चीज़ का पता लगाने में इतनी अधिक अस्पष्टता निश्चय ही खेद का विषय है।"

इस प्रकार की आलोचना के होते हुए भी रूसो का महत्व कभी भी कम नहीं हो सकता है। रूसो के बचाव में यह कहा जा सकता है कि जैसा कि आइंस्टीन ने कहा कि वह प्रथम आधुनिक लेखक था जिसने अच्छे शासन को सामान्य इच्छा की मूल संकल्पना के साथ स्वशासन के साथ जोड़ने का प्रयास किया, यद्यपि इसमें वह हमेशा सफल नहीं हुआ। प्लेटो और अरस्तू के शास्त्रीय सिद्धांतों ने स्वशासन को कम महत्व देकर अच्छे शासन पर अधिक बल दिया लेकिन लॉक के आधुनिक विचारों और

उदारवादीमत के लोगों ने मुख्य रूप से स्वशासन पर ही बल दिया। उन्होंने अच्छे शासन की समस्या को नज़रअंदाज किया।

दूसरे, रूसो पारंपरिक उदारवादियों के सिद्धांतों से इस विषय में अधिक स्पष्ट था कि शासन का उद्देश्य व्यक्ति स्वतंत्रता की रक्षा तक ही सीमित न होकर उसकी समानता से भी संबंधित है क्योंकि इसके बिना स्वतंत्रता विद्यमान नहीं रह सकती। उसने अपने "डिस्कोर्स ऑन इनइक्वेलिटी"में निजी संपत्ति के विरुद्ध जो विद्रोह प्रकट किया था वह "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा हो, किंतु उसने आर्थिक समानता के अपने आदर्श को छोड़ा नहीं। कोई भी नागरिक "कभी भी इतना समृद्ध नहीं होगा कि वह दूसरे नागरिक को खरीद सके और कोई भी इतना निर्धन नहीं होगा कि उसे अपने आपको बेचने के लिए बाध्य होना पड़े।" रूसो ने यह महसूस किया कि व्यावहारिक रूप में संपत्ति के समानुपातिक बंटवारे के आदर्श को बनाए रखना बहुत कठिन है। किंतु चूँकि परिस्थितियों का दबाव निरंतर ही समानता को नष्ट करता रहेगा, इसीलिए कानून का दबाव सदैव इसे बनाए रखने का प्रयास करेगा। जहाँ रूसो संपत्ति को एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति पर प्रभुत्व स्थापित करने के साधन के रूप में देखने में असमर्थ रहा वहीं उसने संपत्ति को निजी प्रभुत्व के रूप में स्पष्ट रूप में पहचान लिया और कहा कि इसे सामान्य इच्छा के नियंत्रण में रखना आवश्यक है।

तीसरे रूसो उस रूप में समाजवादी नहीं था जिस रूप में आज समाजवाद को लिया जाता है। फिर भी अप्रत्यक्ष रूप में रूसो के समानता पर बल देना संबंधी मत ने समाजवादी भावनाओं के विकास में यह जाग्रति लाकर सहायता की है कि यदि लोकतंत्र को जीवित रहना और विकसित होना है तो राजनीतिक स्वतंत्रता और बहुत अधिक आर्थिक असमानता अंततः एक-दूसरे के सहायक नहीं हैं। उसने यह भी कहा कि संपत्ति के अधिकार सहित सभी अधिकार समाज के अंतर्गत ही अधिकार हैं, उसके विरुद्ध नहीं।

चौथे, हालांकि रूसो के दर्शन ने राष्ट्रवाद को योगदान दिया किंतु वह स्वयं किसी भी रूप में राष्ट्रवादी नहीं था। उसने नगर राज्य में नागरिकता का लक्षण अर्थात् मनोभावों और सम्मान के बीच के प्रगाढ़ संबंधों को पुनर्जीवित करके एक भावनात्मक रंग में राष्ट्रीय राज्यों के नागरिकों को उपलब्ध कराया। सर्वदेशीयता (cosmopolitanism) का निहित अर्थ प्राकृतिक नियम था - उसने इसे एक नागरिक के दायित्वों से बचने के मात्र एक बहाने के रूप में लेने का निश्चय किया।

हमारे आज के समय में भी रूसो के विचार बहुत प्रासंगिक हैं, क्योंकि कितनी बार हम प्रतिनिधियों की प्रतिनिधित्व न करने वाली प्रवृत्तियों, दल-लोकतंत्र पर अफसोस करते हैं और डरते हैं कि राज्य नागरिकों के विरुद्ध न हो जाए। और इस प्रकार के विध्वंस से बचने के लिए कितनी बार हमने नागरिक समाज को सुदृढ़ बनाने की कामना की है ताकि अपनी स्वतंत्रता को बचाकर और सुरक्षित रख सकें। हमने इसके लिए भी कम अफसोस नहीं किया है कि आदिकालीन संबंधों के कारण बार-बार उठने वाली हमारे समाज की समस्याएँ केवल इसलिए हैं क्योंकि हमने नागरिकता के महत्व को गंभीरता से नहीं लिया। उसका लोकप्रिय शासक का सिद्धांत नागरिकों को निरंतर याद दिलाता है कि उन्हें कार्यपालकों द्वारा सत्ता को हड़प लिए जाने के विरुद्ध अपनी रक्षा करनी है। स्वतंत्र सरकारों का हर जगह का रिकॉर्ड इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता के चिंतन युद्ध में केवल कल्पित उपायों और संस्थाओं पर निर्भर नहीं किया जा सकता है और इसे बनाए रखना अंततः उन नैतिक गुणों पर निर्भर रहता है जिन्हें रूसो ने सामान्य इच्छा, न्याय और सद्गुण कहा है। इसके अतिरिक्त, हमें रूसो की विद्यमानता रॉल्स (Rawls) के वितरणात्मक न्याय के सिद्धांत, मानव क्षमताओं के विस्तार के रूप में

उसकी विकास की अवधारणा में भी मिल सकती है। और संभवतः यह कहना भी गलत नहीं होगा कि रूसो, नागरिक समाज के आलोचक के रूप में कार्ल मार्क्स और उसके बाद के उग्र परिवर्तनवादियों के विचारों का पूर्वगामी था।

8.9 साराश

यद्यपि बहुत लोग रूसो को प्रबोधन का विचारक मानते हैं, क्योंकि उसने प्रबोधन संबंधी विचारों का अनेक प्रकार से पक्ष लिया। किंतु रूसो प्रबोधन और सामान्य रूप में आधुनिकता का प्रबल आलोचक था। रूसो का सोचना था कि सामाजिक उत्कर्ष व्यक्तियों को भ्रष्ट करता है। उसने सामाजिक उत्कर्ष को खोखलेपन और उद्दण्डता के बराबर माना। रूसो का विश्वास था कि आधुनिक मनुष्य के साथ जो गलत है वह यह है कि उसका अपनी भावनाओं के साथ संपर्क समाप्त हो गया है। रूसो का तर्कसंगतता के प्रति मिश्रित विचार है जिसमें भावना को बराबर या अधिक महत्व दिया गया है।

अपने समय के नागरिक समाज के गुण-दोषों का विवेचन करते समय उसने कहा कि सामाजिक व्यवस्था निजी-हित और संपत्ति की रक्षा के लिए स्थापित की गई थी। उसने यह भी कहा कि निजी संपत्ति ही सामाजिक असमानता, अन्याय और शोषण का मूल कारण है और इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था मनुष्य की प्रवृत्ति के विपरीत थी।

चूँकि समाज आवश्यक था, मनुष्य अपने अर्जित ज्ञान को भुलाकर जंगल में नहीं जा सकता था, और मनुष्य की प्रकृति की प्राप्ति समाजीकरण की प्रकृति पर निर्भर थी, अतः रूसो का काम था - ऐसे उपयुक्त सिद्धांतों का सुझाव देना जिनके ऊपर ऐसी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण किया जा सके जो मनुष्य की स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायक हो। रूसो ने इस काम को अपने "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" में पूरा किया, जहाँ उसने अपेक्षित राजनीतिक समाज की रूपरेखा उपलब्ध कराई। यह आदर्श राजनीतिक समाज एक समाज की छवि में, सामान्य इच्छा के स्वामित्व में (जोकि प्रभुता संपन्न है और जो हमेशा सामान्य भलाई का लक्ष्य रखते हुए सभी से प्राप्त होती है और सभी पर समान रूप से लागू होती है) सामाजिक अनुबंध के द्वारा स्थापित किया गया था। रूसो के सामान्य इच्छा के सिद्धांत में स्वतंत्रता और सत्ता, आपस में अपने आप ही समायोजित हो जाते हैं क्योंकि उन दोनों के बीच कोई तनाव नहीं है। व्यक्ति के अलगाववाद और उसके व्यक्तिगत हितों को बनाए रखने तथा उनकी रक्षा करने के लिए शासन/सत्ता स्थापित करने के लिए निरूपित किए गए इससे पूर्व के सिद्धांत ठीक प्रकार से सत्ता के साथ स्वतंत्रता को समायोजित करने में असफल रहे क्योंकि उनका मनुष्य और समाज का सिद्धांत दोषपूर्ण था।

8.10 अभ्यास

1. "मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेता है किंतु हर जगह वह बेड़ियों में जकड़ा है।" की व्याख्या कीजिए और रूसो के स्वतंत्रता तथा सत्ता में समन्वय लाने के प्रयास की जाँच कीजिए।
2. यह कहाँ तक ठीक है कि रूसो का प्रभुता-सम्पन्न शासक हॉब्स का लेवियाथन है जिसका सिर काट दिया गया।
3. नागरिक समाज के आलोचक के रूप में रूसो का मूल्यांकन कीजिए।
4. रूसो की सामान्य इच्छा की प्रकृति और विशेषताओं की जाँच कीजिए।